मरूमेघ
किसान ई पत्रिका
www.marumegh.com पर ऑनलाईन उपलब्ध

ISSN : 2456-2904
© marumegh 2022

आलेख प्राप्ति : 29-11-2021
स्वीकरण : 02-01-2022

कद्दू वर्गीय सब्जियों में कीट प्रबन्धन

प्रदीप कुमार पटेल[1], समीर कुमार सिंह[2*], विजय कुमार[1], विजय लक्ष्मी राय[3] एवं विष्णु ओमर[1]

[1]शोध छात्र, [2]सहायक प्राध्यापक, कीट विज्ञान विभाग, कृषि महाविद्यालय, आचार्य नरेंद्र देव कृषि एवं प्रौद्योगिकी विश्वविद्यालय, कुमारगंज, अयोध्या–224229
[3]सहायक प्राध्यापक, कीट विज्ञान, कृषि महाविद्यालय परिसर, कोटवा, आजमगढ़–276001, (आचार्य नरेंद्र देव कृषि एवंप्रौद्योगिकी विश्वविद्यालय, कुमारगंज, अयोध्या–224229, उ०प्र०, भारत)
*ई–मेलः–skbhu1991@gmail.com

परिचय

लता वाली सब्जियाँ जैसे लौकी, तरोई, करेला, खीरा, तरबूज एवं खरबूज की खेती मैदानी भागों में गर्मी के मौसम में मार्च से लेकर जून तक की जाती है। इन सब्जियों की अगेती खेती अधिक आय देती है। जिस पर कीटों का अधिक प्रकोप होता है। जिससे फसल को काफी हानि पहुँचती है। जिसके फलस्वरूप उपज कम हो जाती है साथ ही साथ उत्पाद की गुणवत्ता भी अच्छी नहीं होती है। जो हमारी आय को काफी प्रभावित करती है। इस पर लगने वाले प्रमुख कीट एवं उनका प्रबंधन निम्न प्रकार है–

1. **कद्दू का लाल भृंग :–** इस कीट के ग्रब (शिशु) व वयस्क दोनों ही फसल को हानि पहुंचाते हैं। वयस्क कीट पौधों के पत्तियों में छेद कर के हानि हैं। जबकि शिशु पौधों की जड़ों भूमिगत तने एवं भूमि से लगे फलों तथा पत्तो को हानि पहुँचाते है। प्रारम्भिक अवस्था में इनका प्रकोप अधिक होने पर पूरी की पूरी फसल नष्ट हो जाती है। अण्डे से निकले ग्रब (शिशु) मलीन सफेद तथा पूरी तरह से विकसित ग्रब (शिशु) क्रीमी पीले रंग के होते हैं। इस कीट के वयस्क चमकीले लाल पीले रंग का होता है।

कद्दू के लाल भृंग के क्षति के लक्षण

प्रबन्धनः

- फसल खत्म होने पर लताओं को खेत से हटाकर नष्ट कर दें।
- कटाई के तुरंत बाद खेतों की जुताई करें जिससे सुषुप्त वयस्क कीट नष्ट हो जाते हैं।
- फसल की बुवाई के समय को परिवर्तित कर के कीट के प्रभाव को कम किया जा सकता है।
- खेत को अन्य वैकल्पिक पोषक पौधों तथा खरपतवारों से मुक्त रखें।

- मृदा में नीम की खली का उपयोग करने से कीट की ग्रब (शिशु) अवस्था नष्ट हो जाती है।
- वयस्क भृंग को सुबह के समय इकट्ठा करके नष्ट कर दें।
- सायंट्रानिलिप्रोल 10.26 ओ० डी० 90 ग्राम सक्रिय अवयव को 500 लीटर पानी में घोल बनाकर छिड़काव करने से भृंग (बीटल) का नियंत्रण किया जा सकता है।
- फिप्रोनिल 0.3 जी आर० 60 ग्राम सक्रिय अवयव को प्रति हेक्टेयर मृदा में प्रयोग करने से भूमिगत ग्रबों को नियंत्रित किया जा सकता है।

2. **फलमक्खी:**—इस कीट की मादा मक्खी फलों में अंडे देती है तथा शिशु अंडे से निकलने के बाद फलों के गूदे को भीतर ही भीतर खाकर सुरंग बना देते है। इसके प्रभाव से फल प्रारम्भिक अवस्था में टेढ़ा मेढ़ा हो जाता हैं। वयस्क मक्खी का शरीर लाल भूरे या पीला भूरे रंग का पंख पारदर्शक एवं चमकदार होता है जिन पर हल्के भूरे सुनहले रंग की धारियाँ होती हैं, यह 4 से 5 मिलीमीटर लंबी होती हैं, मादा फलमक्खी अर्ध—पके या पके फलों की त्वचा को छेदकर उसमें अंडे देती हैं।

फलमक्खी से प्रभावित फल

प्रबन्धन:

- फलों को अधिक पकने से पहले ही तोडने से इस कीट का प्रकोप काम होता है।
- इस कीट के प्रकोप अधिकता को कम करने के लिए सभी प्रभावित एवं गिरे हुए फलों को इकट्ठा करके और उन्हें नष्ट कर देना चाहिए।
- कटाई के बाद खेत जुताई कर मिट्टी से प्यूपा को अनावृत करना कर देना चाहिए।
- मक्के को सीमावर्ती फसल के रूप में उगाएं क्योंकि मक्खियों को ऐसे लंबे पौधों पर आराम करने की आदत होती है। केवल मक्का में ही कीटनाशकों का छिड़काव करके इन्हे नियंत्रित किया सकता है।
- 50 लीटर पानी में 50 मि० ली० मैलाथियान 0.5 किग्रा गुड़/चीनी युक्त प्रलोभक प्रयोग करें और यदि आक्रमण अधिक हो तो इसे साप्ताहिक अंतराल पर दोहराया जा सकता है।
- फलमक्खी को नियंत्रित करने के लिए क्यूल्योर गंधपाश का प्रयोग करते है। गंधपाश के लिए प्लाईवुड के 5×5×1 सेमी आकार के गुटके को 48 घंटे तक 6:4:1 के अनुपात में एल्कोहलः क्यूल्योर :

मैलाथियान के घोल में भिगोकर लगाना चाहिए। गंधपाश को दो माह के अंतराल पर बदलना तथा एकत्रित मक्खियों को निकालकर फेंक देना चाहिए। एक हेक्टेयर के लिए 10–15 ट्रैप की आवश्यकता होती है और इसे जमीन के स्तर से 3–5 फीट ऊपर कसकर बांधदें। इसके लिए रक्षक अथवा बोतल ट्रैपका भी प्रयोग किया जा सकता है।

3. **सफेद मक्खी :–** यह कीट दिखने में बहुत छोटा सफेद रंग का होता है इस कीट के शिशु व वयस्क दोनों ही फसल को हानि पहुंचाते है। ये पौधों के कोमल भागों से रसको चूसते है। जिससे पत्तियाँ पीली पड़ जाती हैं। जिसके फलस्वरूप पौधों में भोजन बनाने की क्षमता कम हो जाती है और साथ ही साथ फसल उत्पादन कम हो जाता है।

सफेद मक्खी से प्रभावित पौधा

प्रबन्धनः

- खरपतवार को नष्ट करें।
- पौधों के मध्य उचित दूरी बनाए।
- पीला चिपचपा ट्रैप का प्रयोग करे।
- अधिक प्रकोप होने पर इमिडाक्लोप्रिड 17.8 एस०एल0 को 0.03 प्रतिशत की दर से प्रति लीटर पानी या थायामेथोक्सैम 25 डब्लू०जी० 0.4 ग्राम की दर से प्रति लीटर पानी में घोलकर 8 से 10 दिन के अन्तराल पर छिड़काव करें।

4. **सेमीलूपर :–**यह कीट चिचिण्डा को ही नुकसान पहुँचता है। इस कीट की सूंडियाँ ही फसल को क्षति पहुंचाते है। इस कीट की सूंडियाँ पत्तियों को किनारों को कटती है तथा पत्ती को ऊपर मोड़ कर उसी के अंदर रहकर क्षति पहुँचती है। अधिक प्रकोप की अवस्था मे सूंडियाँ पौधों के पत्तियों को खाकर नष्ट कर देते हैं। इस कीट के शिशु ही फसल को क्षति पहुंचाते है। इस कीट की सुंडी हरे रंग की जिस पर अनुदैर्ध्य सफेद पट्टी तथा इनके पिछले उदर खंडों को कूबड़ जैसी संरचना पायी जाती है। इस कीट का वयस्क चमकदार भूरे पंखों वाला होता है।

सेमीलूपर कीट की सूंडियाँ

प्रबन्धनः

- सूंडियों को इकट्ठा करके नष्ट कर दे।
- खड़ी फसल पर 5 प्रतिशत नीमगिरी के अर्क अथवा इंडोक्साकार्ब 14.5 एस०सी० 50 ग्राम सक्रिय अवयव का छिड़काव करने से इस कीट को नियंत्रित किया जा सकता है।

5. **माँहू/चेपा/एफिड :**—माँहू कीट लगभग सभी कद्दूवर्गीय फसलों पर आक्रमण करते है। ये पौधों के कोमल भागों से रस चूसकर फसल को हानि पहुंचाते है तथा साथ ही साथ पत्तियों पर मधु स्त्राव भी करते हैं। इस मधु स्त्राव पर काले कवक का प्रकोप हो जाता है जिससे प्रकाश संश्लेषण की प्रक्रिया बाधित हो जाती है। यह कीट दिखने में काफी छोटे हरे या काले या भूरे रंग के होते है तथा इस कीट के शिशु एवं वयस्क दोनों ही नुकसान पहुँचाते हैं।

माँहू से प्रभावित पौधा

प्रबन्धनः

- लेडीबर्ड भृंग का संरक्षण करें।
- नाईट्रोजन उर्वरकों का अधिक प्रयोग ना करे।
- अधिक प्रकोप होने पर इमिडाक्लोप्रिड 17.8 एस०एल0 को 0.03 प्रतिशत की दर से प्रति लीटर पानी या थायामेथोक्सैम 25 डब्लू०जी० 0.4 ग्राम की दर से प्रति लीटर पानी में घोलकर 8 से 10 दिन के अन्तराल पर छिड़काव करें।

****